REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2025

सैन्य कर्मियों की विधवाओं की समस्याओं और विधवापन के प्रतिकूल प्रभावों का एक अध्ययन: (उत्तरप्रदेश के झांसी महानगर के विशेष संदर्भ में)

Sushil Kumar[1] and Dr. Jitendra Kumar Tiwari[2]
[1]Research Scholar in Sociology, Bundelkhand University Jhansi (UP).
[2]Professor, Department of Sociology,Bundelkhand College Jhansi (UP).

भूमिका

विधवापन एक महिला के लिए सबसे कटु अनुभवों में से एक है जिसमें अक्सर न केवल अपने जीवन साथी को खोने का भावनात्मक दर्द शामिल होता है, बल्कि उसके बाद आने वाले मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और सामाजिक परिणाम भी शामिल होते हैं। हालाँकि जीवनसाथी को खोने का भावनात्मक प्रभाव सार्वभौमिक होता है, लेकिन महिलाओं पर विधवापन के प्रभाव विशेष रूप से गंभीर हो सकते हैं। इस नुकसानसे जुड़ा दु:ख जीवनसाथी के बिना जीवन में ढलने की जरूरत और इसके परिणामस्वरूप सामाजिक भूमिकाओं और रिश्तों में आने वाले बदलाव, एक महिला के स्वास्थ्य को गहराई से प्रभावित कर सकते हैं। सैन्य विधवाओं के लिए विधवापन का मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक बोझ और भी बढ़ जाता है, क्योंकि वे अक्सर अपने जीवनसाथी को खोने का अनुभव अधिक दर्दनाक और सार्वजनिक परिस्थितियों में करती हैं। ये महिलाएँ अनोखी चुनौतियों का सामना करती हैं जो सेना में उनके पतियों की भूमिका और उनके बलिदान के बारे में जनता की धारणा से प्रभावित होती हैं। सैन्य विधवाओं द्वारा अनुभव किया जाने वाला दु:खइस नुकसान की हिंसक और अचानक प्रकृति को देखते हुए,सैन्य सेवा के साथ आने वाले अकेलेपन और कुछ मामलों में एक मजबूत सहायता नेटवर्क के अभाव के कारण और भी गहरा हो सकता है।

अत: उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान शोध पत्र तैयार किया गया है जिसमें वर्णनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है और वस्तु विश्लेषण विधि के द्वारा द्वितीयक आंकड़ों के आधार पर विष्कर्ष निकले गए हैं जिनमें विभिन्न विद्वानोंने समय समय पर इस समस्या के संबंध में जो परिणाम प्राप्त हुए उनको व्यवस्थित रूप से पृष्ठ भूमि के हिसाब से इस शोध पत्र में दर्शाया गया है । जो कि इस प्रकार हैं :

विधवापन के मनोवैज्ञानिक प्रभाव

विधवापन के मनोवैज्ञानिक प्रभाव गहरे होते हैं और विधवा के मानसिक स्वास्थ्य के कई पहलुओं को प्रभावित कर सकते हैं। जीवनसाथी की मृत्यु अक्सर गहरे दु:ख का कारण बनती है, जिसके परिणामस्वरूप अवसाद, चिंता और अभिघातजोत्तर तनाव विकार हो सकता है, खासकर जब जीवनसाथी की मृत्यु युद्ध या सैन्य सेवा जैसी दर्दनाक परिस्थितियों में होती है। सैन्य विधवाएँविशेष रूप से, अपने जीवनसाथी की मृत्यु की प्रकृति केकारण (PTSD) के प्रति संवेदनशील होती हैं। नीनोव अन्य (2025) द्वारा किए गए शोध में पाया गया कि जो व्यक्ति युद्ध जैसी दर्दनाक परिस्थितियों में अपने जीवनसाथी को खो देते हैं उनमें इस क्षति की हिंसक और अचानक प्रकृति के कारण (PTSD) विकसित होने का खतरा बढ़ जाता है। अध्ययनों से पता चला है कि विधवापन का मनोवैज्ञानिक प्रभाव, विशेष रूप से शुरुआती

कुछ महीनों और वर्षों में, असहायता और नियंत्रण के नुकसान की भावनाओं से जुड़ा होता है। विधवाएँ अक्सर पहचान के नुकसान का अनुभव करती हैं, क्योंकि एक साथी के रूप में उनकी भूमिका अचानक छीन ली जाती है, और उन्हें मृत जीवनसाथी की उपस्थिति के बिना एक दुनिया में भटकना पड़ता है। पहचान और भूमिका में यह व्यवधान सैन्य विधवाओं के मामले में महत्वपूर्ण है, क्योंकि जीवनसाथी की मृत्यु का अर्थ उस सैन्य पहचान का भी नुकसान हो सकता है जो अक्सर परिवार के सामाजिक जीवन और सहायता प्रणालियों को परिभाषित करती है। जॉनसन व अन्य (2023) के अनुसार, सैन्य विधवाओं के दीर्घकालिक अवसाद और चिंता से पीड़ित होने की संभावना अधिक होती है, क्योंकि वे न केवल जीवनसाथी की मृत्यु का शोक मना रही होती हैं, बल्कि अपने सामाजिक और आर्थिक सहायता नेटवर्क के पतन से भी जूझ रही होती हैं। विधवापन का मानसिक बोझ संज्ञानात्मक भटकाव का कारण भी बन सकता है, जहाँ महिलाएँ स्वयं को निर्णय लेने या नियमित कार्यों का सामना करने में असमर्थ पाती हैं, जिससे अकेलेपन और निराशा की भावनाएँ बढ़ सकती हैं। यह विशेष रूप से सैन्य विधवाओं के लिए सच है, जिनका जीवन अक्सर उनके जीवनसाथी के सैन्य कार्यक्रम और सैन्य जीवनशैली के साथ आने वाले निरंतर स्थानांतरण के इर्द-गिर्द घूमता है। सापेक्षिक संरचना वाले जीवन से विधवापन की अनिश्चितता में बदलावमहत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक तनाव पैदा कर सकता है।

विधवापन के भावनात्मक प्रभाव

विधवापन का भावनात्मक प्रभाव गहरा और बहुआयामी होता है। जीवनसाथी की मृत्यु अक्सर दुःख, क्रोध, उदासी और अपराधबोध की भावनाओं से भरा एक गहरा भावनात्मक संकट पैदा करती है। सैन्य विधवाओं को जटिल शोक का भी अनुभव हो सकता है, जो लंबे समय तक या तीव्र दुःख से चिह्नित होता है जो दैनिक कामकाज में बाधा डालता है। यह जटिल शोक सैन्य मृत्यु की अचानक और हिंसक प्रकृति से उत्पन्न हो सकता है जो विधवा को अनसुलझे भावनात्मक दर्द और समाधान की कमी के साथ छोड़ देता है। नागरिक विधवापन के विपरीत, जहाँ नुकसान (जैसे बीमारी के साथ) के लिए भावनात्मक रूप से तैयार होने का समय हो सकता है, सैन्य विधवाओं को अक्सर मृत्यु की अप्रत्याशित प्रकृति का सामना करना पड़ता है, जिससे उन पर अधिक गहरा भावनात्मक बोझ पड़ता है। मैककुलो व अन्य (2023) द्वारा किए गए एक अध्ययन से संकेत मिलता है कि सैन्य विधवाओं के नागरिक विधवाओं की तुलना में लंबे समय तक शोक से पीड़ित होने की संभावना अधिक होती है। इसका कारण युद्ध क्षेत्र में जीवनसाथी की मृत्यु से जुड़ा परिस्थितिजन्य आघात, अलविदा कहने में असमर्थता और सामान्य शोक अवधि का अभाव है। इसके अतिरिक्त, सैन्य विधवाएँ अक्सर अपने दुःख में खुद को अकेला महसूस करती हैं, क्योंकि उन्हें अपने जीवनसाथी की मृत्यु और व्यापक सैन्य समुदाय से अपने जुड़ाव के टूटने का शोक मनाना पड़ता है। अपराधबोध जैसी भावनाएँ भी विधवाओं को परेशान कर सकती हैं, खासकर अगर उनके जीवनसाथी की मृत्यु अचानक या दर्दनाक हो। यह सैन्य विधवाओं में आम है, जो अपने जीवनसाथी की मृत्यु पर अपराधबोध या उन परिस्थितियों पर गुस्सा महसूस कर सकती हैं जिनके कारण उन्हें यह क्षति हुई। सैन्य विधवापन में, अक्सर नैतिक जिम्मेदारी का एक अतिरिक्त भाव भी होता है, जिसमें विधवा अपने साथी की मृत्यु का शोक मनाते हुए पारिवारिक विरासत को बनाए रखने का दबाव महसूस करती है। विधवापन के सामाजिक निहितार्थ महत्वपूर्ण हैं और सांस्कृतिक, कानूनी और सामाजिक संदर्भ के आधार पर भिन्न हो सकते हैं। कई समाजों में, विधवापन सामाजिक अलगाव और हाशिए पर धकेल दिया जाता है, क्योंकि विधवाओं को अक्सर वैवाहिक इकाई से अलग समझा जाता है और इस प्रकार वे समुदाय में अपनी सामाजिक पहचान और भूमिका खो देती हैं।

सामाजिक अलगाव

सामाजिक अलगाव विधवापन के सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक परिणामों में से एक है। जीवनसाथी की मृत्यु के बाद, कई महिलाएँ अपने सामाजिक संबंधों से अलगाव का अनुभव करती हैं, खासकर पितृसत्तात्मक समाजों में जहाँ महिलाओं की भूमिकाएँ पुरुषों के साथ उनके संबंधों से निर्धारित होती हैं। मैक्कुलो एट अल. (2023) द्वारा किए गए एक अध्ययन से पता चला है कि 65 प्रतिशत विधवाओं ने सामाजिक अलगाव की बढ़ती भावना की सूचना दी, क्योंकि अब उनके पास विवाहित होने से मिलने वाला सामाजिक दर्जा या समर्थन नहीं था। जीवनसाथी की मृत्यु के बाद अक्सर विधवा को वह सामाजिक सुरक्षा नहीं मिलती जो आमतौर पर विवाह प्रदान करता है।

सैन्य समुदायों में, अलगाव अक्सर और भी ज्यादा स्पष्ट होता है। सैन्य परिवार अक्सर घनिष्ठ समुदायों में रहते हैं जहाँ पति/पत्नी उनके सामाजिक नेटवर्क का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। पति की मृत्यु का अर्थ न केवल व्यक्तिगत क्षति हो सकता है, बल्कि सैन्य समुदाय

से जुड़ाव का भी नुकसान हो सकता है, जो अक्सर सैन्य पत्नियों के लिए सहारे का स्रोत होता है। गुरुंग (2025) के अनुसार, 59 प्रतिशत सैन्य विधवाओं ने बताया कि उनके पति की मृत्यु के बाद उनका सामाजिक नेटवर्क टूट गया, जिसके कारण उनका अकेलापन और सामाजिक अलगाव बढ़ गया।

इस सामाजिक अलगाव के मनोवैज्ञानिक प्रभाव सुप्रसिद्ध हैं, भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में 50 प्रतिशत से ज्यादा विधवाएँ कहती हैं कि वे अपने सामाजिक समूहों से कटी हुई महसूस करती हैं और अक्सर अपने समुदायों में फिर से शामिल होने के लिए संघर्ष करती हैं। सैन्य विधवाओं के लिए, यह अलगाव उनके नुकसान से जुड़े बलिदान के सार्वजनिक आख्यान से और भी बढ़ जाता है। हालाँकि शुरुआत में विधवाओं के बलिदान को सार्वजनिक मान्यता मिल सकती है, लेकिन वास्तविकता यह है कि कई सैन्य विधवाएँ खुद को उसी समुदाय से अलग-थलग पाती हैं जिसने कभी उन्हें सहारा दिया था।

सांस्कृतिक कलंक

विधवापन अक्सर एक गंभीर सांस्कृतिक कलंक लेकर चलता है, खासकर उन संस्कृतियों में जहाँ महिलाओं का मूल्य उनकी वैवाहिक स्थिति से जुड़ा होता है। दुनिया के कई हिस्सों में, विधवाओं को आज भी अशुभ या बदकिस्मत माना जाता है, और उन्हें हाशिए पर धकेले जाने और सामाजिक बहिष्कार का सामना करना पड़ सकता है।

उदाहरण के लिए, भारत में विधवापन को पारंपरिक रूप से सामाजिक बहिष्कार से जोड़ा जाता है। ग्रामीण इलाकों में विधवाओं से अक्सर सादे सफेद कपड़े पहनने और सामाजिक व धार्मिक आयोजनों में भाग लेने से परहेज करने की अपेक्षा की जाती है। एस्सिलफी और बोये (2025) के एक अध्ययन के अनुसार, ग्रामीण भारतीय समुदायों में 42 प्रतिशत विधवाओं ने बताया कि उनके पति की मृत्यु के बाद उन्हें सामाजिक रूप से बहिष्कृत माना जाता है। इन महिलाओं को अक्सर सामाजिक जीवन से हाशिये पर धकेल दिया जाता है, और पारिवारिक समारोहों, खासकर शादियों और त्योहारों में उनकी भागीदारी को आमतौर पर हतोत्साहित किया जाता है।

सैन्य परिवारों में, विधवापन से जुड़ा सांस्कृतिक कलंक भी मौजूद है, लेकिन यह ज्यादा जटिल तरीके से प्रकट होता है। हालाँकि सैन्य विधवाओं को उनके पतियों की सेवा के लिए सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया जाता है, लेकिन उनसे अक्सर 'मजबूत विधवा' की छवि अपनाने की अपेक्षा की जाती है, और देशभक्ति और बलिदान के नाम पर अपने दुःख को छुपाया जाता है। होल्मबर्ग और एल्विनियस (2025) द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि 47 प्रतिशत सैन्य विधवाओं ने मजबूत और दृढ़ बने रहने का दबाव महसूस किया, जिसके कारण वे खुलकर अपना दुःख व्यक्त नहीं कर पाईं। इस सामाजिक अपेक्षा के परिणामस्वरूप भावनात्मक दमन और अकेलेपन की भावनाएँ बढ़ सकती हैं क्योंकि विधवा से अपेक्षा की जाती है कि वह अपने दुःख को निजी तौर पर संभाले बिना उस सहायता प्रणाली के जो नागरिक विधवाओं को उपलब्ध हो सकती है।

वित्तीय भेद्यता

विधवा होने का सबसे तात्कालिक और गंभीर सामाजिक प्रभाव वह आर्थिक तंगी है जिसका सामना अक्सर महिलाएं अपने पति की मृत्यु के बाद करती हैं। यह तंगी सैन्य विधवाओं के लिए विशेष रूप से स्पष्ट होती है, क्योंकि पति की मृत्यु से घर की आय में उल्लेखनीय कमी आ सकती है, खासकर अगर विधवा घर की मुख्य कमाने वाली न हो।

एस्सिलफी और बोये (2025) के अनुसार 63 प्रतिशत विधवाओं ने अपने पति की मृत्यु के बाद आर्थिक तंगी का अनुभव किया। सैन्य विधवाओं के लिए, स्थिति और भी चुनौतीपूर्ण हो सकती है। हालाँकि कुछ सैन्य विधवाएँ पेंशन या उत्तरजीवी लाभों की हकदार होती हैं, लेकिन ये वित्तीय सहायताएँ अक्सर विधवा की पूरी आर्थिक जरूरतों को पूरा करने में विफल रहती हैं, खासकर उन मामलों में जहाँ विधवा को बच्चों की देखभाल करनी होती है।

बच्चों वाली विधवाओं के लिए, वित्तीय चुनौतियाँ और भी ज्यादा गंभीर हैं। बच्चों वाली 45 प्रतिशत विधवाओं ने कहा कि उन्हें भोजन, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा जैसी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष करना पड़ा। ये वित्तीय तंगी मनोवैज्ञानिक तनाव को बढ़ा सकती है, क्योंकि विधवा को न केवल अपने जीवनसाथी के नुकसान का सामना करना पड़ता है, बल्कि अपने परिवार की दीर्घकालिक आर्थिक सुरक्षा का भी प्रबंधन करना पड़ता है। कुछ मामलों में, विधवाओं को अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए पारिवारिक संपत्ति बेचने या दान पर निर्भर रहने के लिए मजबूर होना पड़ता है, जिससे सामाजिक अलगाव और कलंक की उनकी भावनाएँ और बढ़ जाती हैं। वित्तीय

अस्थिरता अक्सर गरीबी और बेघर होने की संभावना को बढ़ा देती है खासकर कम आय वाले क्षेत्रों या समुदायों में रहने वाली विधवाओं के लिए।

सहायता प्रणालियों तक पहुंच

हालाँकि विधवाओं के लिए कुछ सहायता प्रणालियाँ मौजूद हैं खासकर उन विधवाओं के लिए जिन्होंने सैन्य सेवा में अपने जीवनसाथी को खो दिया है, इन संसाधनों तक पहुँच अक्सर असमान होती है और नौकरशाहीकी अक्षमता के कारण बाधित हो सकती है। उदाहरण के लिए, 57 प्रतिशत सैन्य विधवाएँ जटिल प्रक्रियाओं या जागरूकता की कमी के कारण कानूनी सहायता या सरकारी लाभ प्राप्त करने में कठिनाइयों की रिपोर्ट करती हैं। इससे कई विधवाएँ अपने जीवन को फिर से बनाने के लिए आवश्यक वित्तीय या भावनात्मक समर्थन से वंचित रह जाती हैं।

भावनात्मक समर्थन की कमी ग्रामीण इलाकों में विशेष रूप से स्पष्ट है, जहाँ औपचारिक परामर्श और मनोसामाजिक सेवाएँ सीमित हैं। ग्रामीण इलाकों में 66 प्रतिशत विधवाओं का मानना है कि विधवापन की भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक चुनौतियों से निपटने में उनकी मदद के लिए संसाधन बहुत कम हैं। सैन्य विधवाओं कोहालाँकि कभी-कभी पूर्व सैनिक सेवाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं, फिर भी उन्हें मानसिक स्वास्थ्य सहायता में भारी कमी का सामना करना पड़ता है। कई सैन्य विधवाएँ बताती हैं कि उन्हें दी जानेवाली सेवाएँ अक्सर अपर्याप्त होती हैं, खासकर जब दीर्घकालिक भावनात्मक देखभाल की बात आती है।

विधवापन के मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और सामाजिक प्रभाव गहरे और बहुआयामी होते हैं, और सैन्य विधवाओं के लिए ये प्रभाव उनके जीवनसाथी की अचानक और अक्सर दर्दनाक मृत्यु के कारण और भी अधिक गंभीर हो सकते हैं। मनोवैज्ञानिक आघात में अवसाद और चिंता का बढ़ता जोखिम शामिल है, जबकि भावनात्मक आघात जटिल दुःख और सामाजिक अलगाव से चिह्नित होता है। वित्तीय असुरक्षा इन महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों को और बढ़ा देती है। यह स्पष्ट है कि विधवापन केवल जीवनसाथी को खोना नहीं हैय यह एक परिवर्तनकारी अनुभव है जो एक महिला की पहचान, मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक प्रतिष्ठा को गहराई से प्रभावित करता है। सैन्य विधवाओं और व्यापक रूप से सभी विधवाओं का समर्थन करने के प्रयासों को मानसिक स्वास्थ्य देखभाल, आर्थिक सुरक्षा और सामाजिक पुनर्मिलन पर ध्यान केंद्रित करते हुए इन चुनौतियों का व्यापक रूप से समाधान करना होगा।

सैन्य कर्मियों की विधवाओं के सामने आने वाली समस्याएँ

विधवापन, विशेष रूप से सैन्य कर्मियों के लिए, एक बहुआयामी अनुभव है जिसमें कई मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और सामाजिक चुनौतियाँ शामिल होती हैं। सैन्य सेवा में जीवनसाथी की मृत्यु से जुड़ी विशिष्ट परिस्थितियाँ अक्सर हिंसक या दर्दनाक परिस्थितियों में इन चुनौतियों को और भी बढ़ा सकती हैं, जिससे विधवा को न केवल दुःख से, बल्कि सामाजिक और आर्थिक कठिनाइयों से भी जूझना पड़ता है। इस खंड में हम सैन्य विधवाओं द्वारा सामना की जाने वाली विशिष्ट समस्याओं पर गहराई से चर्चा करेंगेऔर सैन्य जीवन के संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

सामाजिक चुनौतियाँः

सामाजिक अलगाव और एकाकीपनःसैन्य विधवाओं के सामने आने वाली प्रमुख समस्याओं में से एक सामाजिक अलगाव है। सैन्य परिवार, विशेष रूप से सैन्य अड्डों पर या घनिष्ठ सैन्य समुदायों में रहने वाले परिवार, अक्सर सहारे के लिए एक-दूसरे पर बहुत अधिक निर्भर रहते हैं। जब एक सैन्य विधवा अपने जीवनसाथी को खो देती है, तो उसे न केवल अपने जीवनसाथी की कमी खलती है, बल्कि अपने सामाजिक संपर्क को भी खोने का खतरा होता है। डॉज एट अल. (2025) के एक अध्ययन के अनुसार 62 प्रतिशत सैन्य विधवाओं ने अपने जीवनसाथी की मृत्यु के बाद सैन्य समुदाय से अलगाव और अलगाव की भावना की सूचना दी। सैन्य परिवारों द्वारा साझा किया जाने वाला भावनात्मक समर्थन और सौहार्द अक्सर खत्म हो जाता है, जिससे विधवाएँ अपने दुःख में खुद को अलगथलग और असहाय महसूस करती हैं। जीवनसाथी की अनुपस्थिति महत्वपूर्ण सामाजिक संबंधों के विघटन का भीकारण बनती है, जो पहले सैन्य जीवन के माध्यम से सुगम होते थे। सैन्य विधवा को इस सामाजिक शून्यता को अकेले ही पार करना पड़ता है जिससे अकेलेपन और अवसाद की भावनाएँ बढ़ सकती हैं।

सांस्कृतिक और सामाजिक कलंकःकई समाजों में विधवापन एक सांस्कृतिक कलंक है जो विधवा की सामाजिक स्थिति को प्रभावित कर सकता है। कुछ संस्कृतियों में एक विधवा को अशुभ या बदकिस्मत माना जा सकता है, जिसके कारण उसे सामुदायिक गतिविधियों या सामाजिक समारोहों से बहिष्कृत कर दिया जाता है। उदाहरण के लिए भारत में पारंपरिक प्रथाएं अक्सर विधवाओं को सामाजिक हाशिए पर डाल देती हैं, जहां उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे शोक में रहें और पुनर्विवाह से बचें। इसी तरह सैन्य विधवाओं को दोहरे कलंक का सामना करना पड़ता हैः जबकि उनके नुकसान को मान्यता दी जाती है और सार्वजनिक रूप से शोक मनाया जाता है, वे अक्सर अपनी बदली हुई स्थिति के कारण द्वितीयक बहिष्कार का अनुभव करती हैं। जैसा कि गुरुंग (2025) ने पाया है कि 52 प्रतिशत सैन्य विधवाओं को लगता है कि विधवा के रूप में उनकी सार्वजनिक मान्यता कभीकभी उन्हें एक जटिल सामाजिक स्थिति में डाल देती है

आर्थिक चुनौतियाँः

वित्तीय अस्थिरताःसैन्य विधवाओं के सामने आने वाली सबसे तात्कालिक और गंभीर समस्याओं में से एक वित्तीय चुनौतियाँ हैं। सैन्यकर्मी अक्सर अपने परिवारों की मुख्य आय का स्रोत होते हैं, और उनकी मृत्यु विधवा को आर्थिक संकट में डाल सकती है खासकर यदि वह मुख्य कमाने वाली न हो। अध्ययनों से पता चलता है कि 45 प्रतिशत सैन्य विधवाएँ अपने जीवनसाथी की मृत्यु के बाद आर्थिक कठिनाइयों का सामना करती हैं, और अक्सर गुजारा करने के लिए संघर्ष करती हैं। उदाहरण के लिए, सैन्य पेंशन या उत्तरजीवी लाभ प्राप्त होने में समय लग सकता है और अक्सर विधवा की दीर्घकालिक जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं होते हैं। होल्मबर्ग और एल्विनियस (2025) के अनुसार, हालाँकि उत्तरजीवी लाभ कुछ वित्तीय राहत प्रदान करने के लिए होते हैं, लेकिन वे अक्सर अपर्याप्त साबित होते हैं, खासकर जब बच्चों की देखभाल और दीर्घकालिक देखभाल की लागत पर विचार किया जाता है।

आर्थिक निर्भरताःदोहरी आय वाले परिवार से एकल आय वाले परिवार में जाना सैन्य विधवाओं के लिए विशेष रूप से कठिन हो सकता है। 62:प्रतिशत सैन्य विधवाओं का कहना है कि उन्हें अपने पति की मृत्यु के बाद जीवन स्तर में गिरावट के साथ तालमेल बिठाना पड़ता है, और कई विधवाओं को परिवार का भरणपोषण करने और अपने बच्चों का पालन-पोषण करने में भी कठिनाई होती है। यह आर्थिक तंगी ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली विधवाओं या उन विधवाओं के लिए विशेष रूप से गंभीर है जिनके पास स्थिर रोजगार पाने के लिए आवश्यक शिक्षा या कौशल नहीं है। ब्राउनियस व अन्य (2024) द्वारा किए गए एक अध्ययन में बताया गया है कि निम्न-आय वाले क्षेत्रों में सैन्य विधवाओं को गरीबी का उच्च जोखिम होता है, और वे अक्सर अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए धर्मार्थ दान या सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों पर निर्भर रहती हैं।

लाभ और कानूनी अधिकारों में देरीःसैन्य परिवारों के लिए विधवापन का सबसे निराशाजनक पहलू वित्तीय लाभ प्राप्त करनेमें देरी है। विधवाओं को अक्सर पेंशन, स्वास्थ्य लाभ या अन्य वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए नौकरशाही की बाधाओं से जूझना पड़ता है। गुरुंग (2025) के अनुसार 50 प्रतिशत सैन्य विधवाओं ने बताया है कि उन्हें उत्तरजीवी लाभ प्राप्त करने में देरी या समस्याओं का सामना करना पड़ा है, जिससे उनकी वित्तीय चुनौतियाँ और बढ़ सकती हैं। यह देरी विधवा के भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए विशेष रूप से हानिकारक हो सकती है, क्योंकि यह पहले से ही कठिन समय में तनाव और अनिश्चितता की एक और परत जोड़ देती है।

मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक चुनौतियाँः

दुःख और हानिःजीवनसाथी को खोने का मनोवैज्ञानिक प्रभाव विनाशकारी होता है और सैन्य विधवाओं के लिए, यह आघात अक्सर उनके पति की हिंसक या अचानक मृत्यु से और भी बढ़ जाता है। सैन्य विधवाएँखासकर जिनके पति युद्ध में मारे गए हों, अक्सर जटिल शोक से पीड़ित होती हैं, एक ऐसी स्थिति जिसमें शोक की प्रक्रिया लंबी या असहनीय हो जाती है। नीनोव अन्य (2025) के अनुसार, सैन्य विधवाओं को अपने नुकसान की अचानक और दर्दनाक प्रकृति के कारण दीर्घकालिक शोक विकसित होने का अधिक खतरा होता है। मानसिक तनाव, संघर्ष,दुःख के अलावा, कई सैन्य विधवाएँ अवसाद, चिंता और निराशा की भावनाओं जैसी मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों का भी सामना करती हैं। मैक्कुलो व अन्य (2023) द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि 63 प्रतिशत सैन्य विधवाएँ अपने जीवनसाथी की मृत्यु के बाद गंभीर मनोवैज्ञानिक संकट का अनुभव करती हैं और अक्सर अपनी पहचान और उद्देश्य खो देने का एहसास करती हैं। जीवनसाथी की अनुपस्थिति में असहायता की गहरी भावना भी पैदा हो सकती है क्योंकि विधवा को अपने जीवनसाथी के सहारे के बिना भविष्य की राह पर चलना पड़ता है।

अकेलापन और अलगाव:विधवापन का मनोवैज्ञानिक बोझ अक्सर गहरे अकेलेपन के साथ आता है। जीवनसाथी की मृत्यु विधवा के जीवन में एक खालीपन पैदा करती है, और सैन्य विधवाओं के लिए, किसी अंतर्निहित सहायता प्रणाली के अभाव के कारण सामाजिक अलगाव और भी गहरा हो सकता है। किंग व अन्य (2021) के अनुसार, 70 प्रतिशत सैन्य विधवाएँ अपने जीवनसाथी की मृत्यु के बाद, विशेष रूप से मृत्यु के बाद के वर्षों में, अकेलापन या अलगाव महसूस करती हैं। सामाजिक जुड़ाव की कमी, उनके दु:ख के भावनात्मक बोझ के साथ मिलकर, अक्सर व्यापक समुदाय द्वारा असमर्थित होने की भावना को जन्म देती है।

अभिघातज के बाद का तनाव और भावनात्मक दमन:कई सैन्य विधवाएँ उन पर लगाई गई सामाजिक अपेक्षाओं के कारण भावनात्मक दमन का शिकार होती हैं। हालाँकि युद्ध में जीवनसाथी की मृत्यु को राष्ट्रीय बलिदान माना जाता है,लेकिन विधवा पर पड़ने वाले भावनात्मक प्रभाव को अक्सर कम करके आंका जाता है। सैन्य विधवाएँ भावनात्मक रूप से संघर्ष करते हुए भीअपनी शक्ति या देशभक्ति की छवि बनाए रखने के लिए अपने दु:ख को एक तरफ रखने के लिए बाध्य महसूस कर सकती हैं। शोररव अन्य (2022) ने पाया कि 49 प्रतिशत सैन्य विधवाओं ने भावनात्मक दमन की सूचना दी, जहाँ उन्हें सामाजिक अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए अपनी भावनाओं को छिपाने की आवश्यकता महसूस हुई।

निष्कर्ष

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं किसैन्य विधवाओं को भावनात्मक, सामाजिक और आर्थिक कठिनाइयों से जुड़ी अनोखी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सामुदायिक समर्थन और सांस्कृतिक कलंक के अभाव के कारण उन्हें जो सामाजिक अलगाव का सामना करना पड़ता है, वह उत्तरजीवी लाभ और अन्य वित्तीय सहायता प्राप्त करने में देरी के कारण उत्पन्न वित्तीय अस्थिरता से और भी बढ़ जाता है। इसके अतिरिक्त विधवापन का मनोवैज्ञानिक प्रभाव, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो युद्ध में अपने जीवनसाथी को खो देते हैं, दीर्घकालिक दु:ख, मानसिक स्वास्थ्य संघर्ष और भावनात्मक दमन का कारण बनता है। सैन्य विधवाओं को अक्सर नौकरशाही सामाजिक और मनोवैज्ञानिक चुनौतियों के एक जटिल समूह से जूझना पड़ता है बिना उस सहायता के जिसकी उन्हें सख्त जरूरत होती है। इन मुद्दों से निपटने के लिए सरकारों और सैन्य संगठनों के लिए विधवाओं के लिए अधिक सुलभ मानसिक स्वास्थ्य सहायता, बेहतर वित्तीय सहायता और एक अधिक मजबूत सामाजिक सुरक्षा जाल प्रदान करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची

- डेमिलेप, जे.जेड., और डैचलसन, ईएमएम (2025)। उत्तरी पठार राज्य में विधवाओं के मनोवैज्ञानिक कल्याण पर लिंग और कथित सामाजिक समर्थन का प्रभाव। द पिलर जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 1(3), 66–81।
- ई.आर., एफ. सैन्य जीवनशैली और परिचालन तैनाती का वैवाहिक गतिशीलता पर प्रभाव: तुर्की में सैन्य जीवनसाथियों का गुणात्मक अध्ययन। सशस्त्र बल और समाज
- कैम्पमार्क, बी. (2024). विधवा निर्माता की रक्षा: अमेरिकी मरीन ने ऑस्प्रे को निर्दोष ठहराया. अंतर्राष्ट्रीय नीति डाइजेस्ट
- मिशेल, के. (2024). अप्रत्याशित मृत्यु के दुःख से जूझ रही सैन्य विधवाओं की सहायता के सर्वोत्तम तरीके (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, कैलिफोर्निया बैपटिस्ट विश्वविद्यालय)।
- राशिद, एम. (2022). 'शोक का उचित उपयोग: माताएँ, विधवाएँ और सैन्य मृत्यु की (अ)शोकीयता नोर्मा, 17(1), 52–66.
- शोरर, एस., डेकेल, आर., और नटमैन–श्वार्ट्ज, ओ. (2022). सामाजिक नीतिगत उथल–पुथल के आलोक में "पुनर्विवाहित सैन्य विधवाओं" का दुःख। मृत्यु अध्ययन, 46(6), 1381–1389
- ई कोलंबो, डीजी, और मार्टिनेज–वाजक्वेज, जे. (2024)। ब्राजील में सैन्य कर्मियों की बेटियों के लिए आजीवन उत्तरजीवी पेंशन और शैक्षिक विकल्प। इंटरनेशनल सेंटर फॉर पब्लिक पॉलिसी, एंड्रयू यंग स्कूल ऑफ पॉलिसी स्टडीज, जॉर्जिया स्टेट यूनिवर्सिटी।

- जैकब, यूएचपी, और एमबाम, एम. (2024). विधवापन और युद्धोत्तर पीड़ाएँः युद्धविराम दिवस के नए आयाम को समझना. एकवे जर्नल, 17(1).
- जिंग, के., फेंग, जेड., जू, जे., हे, वाई., टैंग, क्यू., झांग, क्यू., ... और झाओ, एम. (2024)। चीनी सैन्य कर्मियों का मानसिक स्वास्थ्यः एक क्रॉस–सेक्शनल महामारी विज्ञान अध्ययन। बीएमसी पब्लिक हेल्थ, 24(1), 3525।
- McCullough, A. J., & Likcani, A. (2023). Grief Process and Support Systems for Military Widows, p. 18.
- वेसेलोवा, आई.एस. (2023)। पतियों द्वारा स्मृति भोज की माँग, या ''पौराणिक प्रेमी'' का मूल भाव। युद्ध के बाद विधवाएँ क्या बातें करती हैं? खंड 6 संख्या 3 2023, 89।
- कार्निनन, एम. (2023). अपमान से मुआवजे तक? 1918–1945 के गृहयुद्ध के दौरान लाल विधवाओं के बीच गरीबी और कल्याणकारी संस्थाओं का अनुभव। अनुभव के इतिहास के रूप में जीवित संस्थाओं में (पृष्ठ 159–182)। चौमः स्प्रिंगर नेचर स्विट्जरलैंड।
- सिंगर, एल. (2022). सैनिक की पत्नी से विधवा तकः सैन्य विधवा के जीवंत अनुभव और सामाजिक सहायता नेटवर्क के प्रभाव की पड़ताल (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, क्रेयटन विश्वविद्यालय)
- होलोम, ई.सी., और लुमेजेनु, ए. (2022). ट्रांस–साइलेंसिया में ''महायुद्ध'' के पीड़ितः स्रोतों की पुनर्प्राप्ति और अमान्य, अपराधी और युद्ध विधवाओं का एक डेटाबेस डिजाइन करना। स्टुडिया हिस्टोरिया इकोनॉमिका, 40(1), 97–122
- De Pedro, K. M. T., & Astor, R. A. (2011). The Children of Military Service Members: Challenges, Supports, and Future Educational Research, p. 12.
- श्विर्टलिच, ए.एम. (2022). विधवाएँ और राजः भारत में विधवा हुईं ब्रिटिश महिलाएँ, 1860–1900 (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, यूएनएसडब्ल्यू सिडनी)।
- स्ट्रैंड, वी., और युसरिजा, बी. (2021). आचे, इंडोनेशिया में युद्ध विधवाओं की शांति के बारे में रोजमर्रा की समझ. जर्नल ऑफ पीसबिल्डिंग एंड डेवलपमेंट, 16(1), 102–106
- कीटिंग, आरडब्ल्यू (2021). मौन सेवाः उत्तरी घरेलू मोर्चे पर विधवाएँ, अनाथ और आश्रित माताएँ। अमेरिकी उन्नीसवीं सदी का इतिहास, 22(2), 197–218
- ब्लैक, एम. (2021). बलिदानः एक स्वर्ण सितारा विधवा की सत्य के लिए लड़ाई. पेंगुइन
- फुमजिले, म्लाम्बो न्गुका (2020). कोविड–19 से बेहतर वापसी के प्रयासों में विधवाओं को शामिल करना, अंतर्राष्ट्रीय विधवा दिवस (23 जून) पर संयुक्त राष्ट्र के अवर महासचिव और संयुक्त राष्ट्र महिला की कार्यकारी निदेशक द्वारा वक्तव्य।
- किंग, बीएम, कैर, डीसी, और टेलर, एमजी (2021)। विधवा होने के बाद अकेलापनः सैन्य और सामाजिक समर्थन की भूमिका। जर्नल्स ऑफ जेरोन्टोलॉजीः सीरीज बी, 76(2), 403–414।
- ग्रिशा, वीजे और जाधव, रेखा के. (2015). युद्ध शहीदों के परिवारः कर्नाटक राज्य के संदर्भ में प्रतिपूरक लाभ और कल्याणकारी उपाय, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन मैनेजमेंट एंड सोशल साइंस, खंड 41 (61), पृष्ठ 214–22
- चामी, जेएम, और पूले, जेए (2023)। युवा विधवाएँः जीवनसाथी के नुकसान से निपटने में लचीलेपन के लिए तनाव और सुरक्षात्मक कारकों की भूमिका। ओमेगा–जर्नल ऑफ डेथ एंड डाइंग, 88(2), 477–504।